बच्चों के समाजीकरण में जेण्डर की भूमिका

[Role of gender in socialization of children:]—

(Note → इस Notes में निम्नलिखित बिंदुओं पर चर्चा करेंगे।)

⟹ 1. बचपन [BABYHOOD/CHILDHOOD]

* बचपन की विशेषताएँ [Characteristics of Babyhood]
* बच्चे के समाजीकरण में बचपन और जेण्डर की भूमिका

⟹ 2. परिवार [FAMILY]

* परिवार की विशेषताएँ (Characteristics of family)
* " का महत्व (Importance of family)
* " के कार्य (functions of ")
* " कि भूमिका बालक के समाजीकरण में।
* बच्चों के समाजीकरण पर प्रभाव डालने वाले कुछ तथ्य।

⟹ 3. समुदाय [COMMUNITY]

* परिभाषा, अर्थ [Meaning & Definition]
* बालक के समाजीकरण में समुदाय की भूमिका
* समुदाय के प्रकार

⟹ 4. मीडिया [MEDIA]

* प्रकार
* माध्यमों का उपयोग
* बालक के समाजीकरण में मीडिया की भूमिका

परिचय:— समाजीकरण से तात्पर्य अधिगम की उस प्रक्रिया है जो बालक के जन्म के बाद प्रारम्भ हो जाती है, और जीवन भर चलती रहती है समाज में बालक के विभिन्न गुणों का विकास होता है। जैसे सामाजिक गुण, नैतिक गुण, भाईचारा व सहयोग की भावना, आदी उपरोक्त गुणों का विकास परिवार, समाज, विद्यालय एवं खेल कुद से होता है। जब यह गुण विकसित हो जाता है तो बालक का समाजीकरण हो जाता है और वह स्वयं की एवं समाज कि आवश्यकता की पुर्ति करता है तथा समस्याओं का समाधान करने में सक्षम हो जाता है

P.T.O

1. बचपन

यह अवस्था दो सप्ताह के बाद दो वर्ष तक की अवस्था है। इस अवस्था के प्रारम्भ में बालक पूर्णत: असहाय होता है, और अपनी सभी आवश्यकता के लिए दूसरे पर निर्भर रहता है, लेकिन इस अवस्था में विकास की गति तीव्र होती है। विकास के साथ बालक की माँसपेशियों पर नियंत्रण बढ़ता जाता है, और वह धीरे धीरे आत्मनिर्भर बनता जाता है। और धीरे वह स्वयं खाना खाने, खेलने, चलने, हँसने, बोलने जैसे सभी व्यवहार सीख जाता है। प्रमुख संवेग इसी अवस्था में उसके उदित हो जाते हैं।

कुछ मनोवैज्ञानिक का कहना है कि इस अवस्था में बालक में नयी-नयी विशेषताओं का विकास करता है, एवं अपनी स्मृति क्षमता का प्रदर्शन करने लगता है।

* बचपन की विशेषताएँ *

बचपन की कुछ विशेषताएँ होती है। जो निम्नलिखित है।

1. यह अवस्था बालक के जीवन की आधारशिला के रूप में जानी जाती है। इस अवस्था में बालक में संवेग विकसित होने लगते हैं।
2. इस अवस्था में बालक का बोध व भाव का विकास प्रारम्भ हो जाता है। इस अवस्था में बालक अनेक क्रियाएँ करना आरम्भ ~~करना~~ कर देता है।
3. इस अवस्था में बच्चे का विकास तीव्र गति से होता है, जिससे बालक में बहुत सारे परिवर्तन स्पष्ट रूप से दिन-प्रतिदिन दिखाई देते हैं। बालक नये कौशल को अर्जित करने लगता है।
4. जब बच्चा शैशवावस्था में होता है तो वह पूरी तरह दूसरे पर आश्रित रहता है, लेकिन बचपन कि अवस्था में बालक चलना, बोलना, गति करना शुरू करता है।
5. जब बालक में बोध के भाव का विकास प्रारम्भ हो जाता है। जिससे उसके जीवन में आगे होने वाला विकास महत्वपूर्ण ढंग से प्रभावित होता है।
6. बचपन की अवस्था में बालक पर विशेष ध्यान दिया जाना चाहिए क्योंकि वह चलना, हिलना-डुलना इत्यादी प्रारम्भ कर देता है। यदि ध्यान न रखा जाए तो वह घायल हो सकता है, एवं उसे शारीरिक कष्ट भी होगा।

* बच्चे के समाजीकरण में बचपन और जेंडर की भूमिका :*

बालक बचपन में ही जेण्डर समाजीकरण के रूप में काम करने लगता है। बच्चे को उसके घर में ही जेण्डर कि जानकारी होने लगती है। बालक जब खाना खिलाते समय या बात करते समय जेण्डर के अनुसार ही भाषा का प्रयोग किया जाता है, जिससे बालक समझ जाता है कि वह किस लिंग का है। बच्चों के कपड़े भी जेण्डर के अनुसार पहनाए जाते हैं। बालक जब अपने घर या आस पास खेलते है तो वहाँ भी वह जेण्डर के अनुसार टोली, समूह भी जेण्डर के अनुसार होता है।

Scanned with CamScanner

क्योंकि बालक का जन्म परिवार में होता है और परिवार समाज में रहता है, जब बालक समाज में जाता है तो उसे विभिन्न प्रकार जाति, धर्म वेशभूषा का सामना होता है, जो बालक के समाजीकरण में सहयोग देता है। जो बचपन से ही बालकों के जण्डर की पहचान संबंधी कार्य करने लगते हैं।

2. ✯ परिवार ✯

परिवार मानव समाज की आधारभूत इकाई है। कोई भी बालक का जन्म के बाद सबसे पहले अपने परिवार से सामना होता है, जिसमें माता-पिता, दादा-दादी, बुवा सभी एक साथ मिलकर रहते है, एवं एक दूसरे का पूर्ण सहयोग भी करते हैं।

परिवार को अंग्रेजी में फैमिली [Family] कहते हैं। family शब्द फेमलस [Famulus] शब्द से बना है, जिसका मतलब "नौकर" है।

Family ⟶ Famulus ⟶ (नौकर)
(परिवार)

जैसा की हम जानतें हैं कि कोई भी परिवार माता-पिता एवं उनके बच्चे होते है। परिवार के बड़ा रूप में दादा-दादी, चाचा-चाची भाई-बहन मामा-चचेरे भाई बहन आदी आते है। परिवार के कई प्रकार व रूप भी होते हैं।

*** परिभाषा** - परिवार को अनेको महान विद्वानों व शिक्षाशास्त्रीयों ने अपने-अपने अनुसार परिभाषित किया है। जिनमें से कुछ परिभाषा निम्नलिखित हैं।

⇒ क्लेयर महोदय के अनुसार व मेज :- "परिवार एक ऐसा समुह है जो पर्याप्त रूप से लैंगिक रूप से लैंगिक संबंध पर आधारित होता है तथा जो इतना स्थायी होता है कि इसके द्वारा बालकों के जन्म व पालन-पोषण की व्यवस्था की जाती है।"

⇒ मैकाइवर के अनुसार :- "परिवार से हम संबंधों की वह व्यवस्था समझते हैं जो माता-पिता एवं उनकी संतानों के बीच पाई जाती है।"

P.T.O

* परिवार की विशेषताएं : *

1. परिवार मानव समाज की आधारभूत ईकाई है।
2. परिवार रक्त संबंधों पर आधारित होता है।
3. परिवार बच्चे का पहला विद्यालय होता है।
4. परिवार लैंगिक संबंधों पर आधारित होता है।
5. परिवार पालन-पोषण और भरण पोषण के लिए उत्तरदायी होता है।
6. परिवार स्थायी होता है।
7. स्त्री-पुरुष (पति-पत्नि) दोनों परिवार में महत्ता होती है जो लैंगिक भेद भाव में कमी करती है।
8. परिवार संयुक्त वो एकात्मक दोनों ही रुपों में पाया जाता है।
9. परिवार से बालक का उच्च विकास होता है।
10. .. से बालक में सहयोग आदी की भावना विकसित होती है।

* परिवार का महत्व *

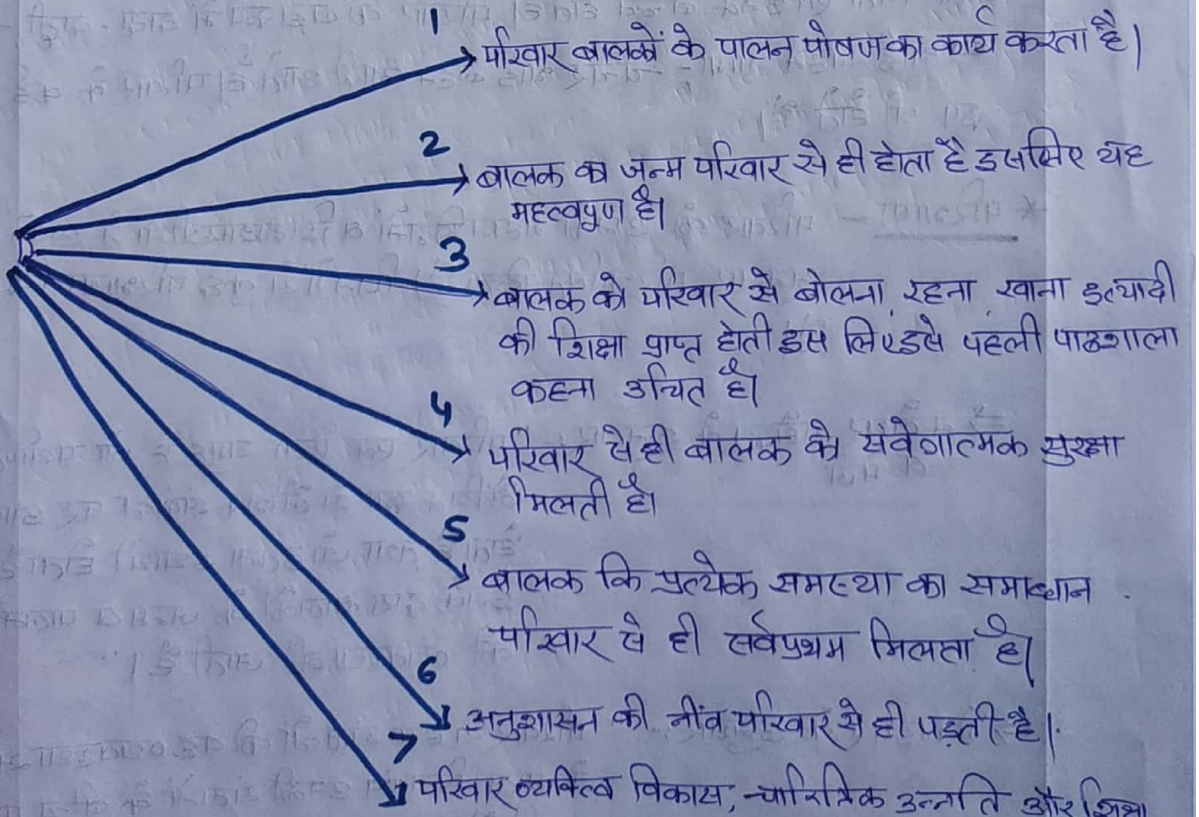

Scanned with CamScanner

1. अनुकरण द्वारा :- बालक कि क्या समाज में भूमिका होगी इस विषय में बालक सबसे पहले अपने परिवार के सदस्यों से सीखते है। जब बालक प्रारंभिक बाल्यावस्था में होता है तो अधिकांश कार्य वह बड़ो की नकल अथवा अनुकरण एवं पुनर्बलन के माध्यम से सीख जाता है। बच्चे परिवार के लोगों का जैसा व्यवहार देखते है उसी को वह स्वंय नकल करतें है।

2. कामों के विभाजन द्वारा :- घर अथवा परिवार में कार्यों का विभाजन साफ देखा जा सकता है। उसी प्रकार घर के बाहर भी पुरुष - स्त्री या माता - पिता के काम में अंतर होता है। अधिकांश घरों में घर के काम व बच्चों के देखभाल का काम महिलाओं का ही समझा जाता है। जब बालक से पुछा जाता है कि घर पर वह क्या काम करतें हैं तो उत्तर मिला है कि माता-पिता भी लड़का लड़की को अलग काम देते है।

3. पहनावा द्वारा :- यह अधिकांशत समाजों में लड़का - लड़की और स्त्री - पुरुष अलग-अलग प्रकार के कपड़े पहनतें हैं। कुछ जगहों पर यह भेद नाम मात्र होता है लेकिन कुछ जगहों बहुत अधिक भी होता है। कहीं कहीं स्त्रीयों को सर से पैर तक पुरा शरीर ढककर रखना पड़ता है। महिलाओं को घुँघट में रहना। पहनावे के ढंग का प्रभाव व्यक्तियों की गतिशीलता, उनकी आजादी की भावना व सम्मान पर पड़ता है।

4. रहन सहन में भिन्नता :- परिवार में बच्चो के लिए जेण्डर - भूमिका प्रतिरूप का काम करते हैं। यह प्रतिरूपण उनके वस्त्रों में ही नहीं बल्कि उनके रहन सहन में भी दिखता है। लड़कीया को घर में ही रहना है कहीं भी घुमने जाने पर रोक होती है। जो की उनके स्वंय अनुसार जीवन जीने में बाधक होता है।

5. अधिकारों में विभिन्नता :- प्राचीन काल से ही पुरुष को स्त्रीयों से अधिक श्रेष्ठ माना जाता है, तथा स्त्रीयों पर पुरुषों का नियंत्रण होना चाहिए, महिलाओं को पुरुषों की सम्पत्ति के रूप में देखा जाता है। शरीर महिला का है मगर उसपर अधिकार पुरुष का है, यह उचित नहीं है। यह महिला के साथ अन्याय है।

6. शिक्षा में भेदभाव :- हमेशा से शिक्षा जैसे बहुमुल्य वस्तु से स्त्री को दुर रखा जाता रहा है। आज भी बहोत सारे लोग का कहना है कि ज्यादा पढ़ा के नौकरी नहीं कराना है लड़की बस घर का काम करे सिखे व परिवार सम्भाले यही काम है।

जबकि आज हम देख सकते है की कोई ऐसा कार्य नहीं है जिसमें महिला पिछे है। कुछ लोगों की विचारधार बदली है कुछ आज भी पुरानी विचारधारा लिये बैठे।

वर्तमान समय सरकार महिला को उपर उठने का भरपूर अवसर दे रही है यह एक सराहनीय कदम है।

Scanned with CamScanner

उपरोक्त बिंदुओं व उदाहरण क्रियाएँ जेण्डर निर्मित में सहायक होते है। जुडिथ बटलर ने इसे परफॉर्मिटी अर्थात नाटकीयता कहा। जिसे समाज में अनेक रूपों में स्त्री निभाती है, जिसका निदेशक समाज है जो स्त्रीयो को अपनी आवश्यकता के अनुसार निर्देशित करता है। जिसमें उन सभी कार्यों को जोड़ा जाता है जो केवल एक स्त्री के लिए समाज द्वारा निर्धारित की जाती है।

*बच्चों के सामाजीकरण पर प्रभाव डालने वाले तथ्य:-

1. यदि माता-पिता दोनों सामान्य व्यवहार अपनाते है तो बच्चों का व्यवहार संतुलित होगा क्योंकि बच्चे बड़ों की नकल करते है।

2. यदि परिवार में माता-पिता का स्वयं संबंध संतुलित नहीं है तो उसका बच्चों पर प्रभाव पड़ता है।

3. यदि परिवार के सदस्यों के पारस्परिक संबंध, प्रेम, स्नेह, दया, मैत्री, घृणा आदि से परिपूर्ण है तो बालक पर उसका ~~व्यवहार~~ वैसा प्रभाव पड़ता है।

4. जिस घर व परिवार में विभिन्न जाति व संप्रदाय के बारे गलत धारणाए बालकों को बता दी जाती है तो वह भी अपने अंदर सारी गलत धारणाए बिठा लेगा। जिससे उसके सामाजीकरण पर प्रतिकूल प्रभाव होगा।

5. बालक को जैसी बात व विचार बताए व सुनाए जाएगे बालक उसके अनुसार ही व्यवहार करता है।

6. घर का असंतोषजनक, व कुंठाओं से ग्रस्त मान्यताओं के विरुद्ध वातावरण बच्चों के सामाजिक व्यवहार को दुष्प्रभावित करता है, उनपर बुरा प्रभाव डालता है।

परिवार और समाज के बाद बालक का सामना विद्यालय से होता है, जो समाजीकरण की महत्वपूर्ण संस्था है। विद्यालय बालक का समाजीकरण इस प्रकार करता है कि जेण्डर या सामाजिक लिंग की उत्पत्ति होती है। इसमें पाठ्यक्रम, पुस्तकें ~~इसमें~~ अनौपचारिक क्रियाएँ आदी सभी का योगदान होता है।

P.T.O

Scanned with CamScanner

NAME- IRSHAD AHMAD

COLLEGE NAME- SHAKUNTALAM INSTITUTE OF TEACHERS EDUCATION

AT- KRINDIH, KUMHAU STATION ROAD, SHIOSAGAR, SASARAM (ROHTAS)

Thanks for reading full notes

Irshad

continue next day.

Scanned with CamScanner